डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

प्रसाद और उनका महाकाव्य 'कामायनी'

- 'कामायनी' प्रसाद की अंतिम तथा सर्वश्रेष्ठ कृति है। छायावाद की युग की यह विशिष्ट कृति 1936 ई0 में प्रकाश में आयी यह कृति मानवीय, सांस्कृतिक और मानव मन के इतिहास और क्रमिक विकाश का प्रतिकात्मक आख्यान प्रस्तुत करना चाहती है।
- ठस काव्य में न मंगलाचरण है और न ही रीतिकालीन शास्त्रीयता गतानुगतिक मोह

कथा प्रकृति के विराट चित्रफलक पर उभरती है। तथा देव जाति के विगत वैभव और मानव इतिहास की आकुल चिन्ता से प्रारम्भ होकर समरस और आनन्द अखण्ड की उपलब्धि तक उपर उठती है।

कामायनी में कामगोत्रजा 'श्रद्धा' हृदय की, 'मनु' मन का इड़ा बुद्धि की प्रतीक है।

- प्रसाद ने 'कामायनी' के आमुख में स्वयं कथा की प्रचीनता और उसके रूपकत्व का संकेत किया है।

''यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्‌भुत मिश्रण हो गया इसलिए मनु, श्रद्धा, इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति करे तो मूझे कोई आपत्ति नहीं ।''

हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी लग जाता है। यहॉ श्रद्धा रांगात्यिका वृत्ति और इड़ा व्यवसायत्मिका वृत्ति है।

- 'कामायनी' जल प्लावन के विश्रुत मिथक के आधार पर सृजित, देवसृष्टि के एकमात्र 'मनु' की चिन्ता से प्रारम्भ आख्यान को समरस आनन्द की भूमि तक उठाने वाला उदान्त महाकाव्य है। नारी के प्रति असीम सहानुभूति और श्रद्धा का पूर्ण प्रतिफलन इस काव्य में है महाकाव्य का शिर्षक भी यही है और समस्त कार्य व्यापारो के केन्द्र में स्थित संपालिका भी यही नारी पात्री है।

खण्ड प्रलय में विध्वस्त देव सृष्टि के अवशेष मनु के अवसाद को चीर कर आशा की किरणे देती हैं। महाकाव्य के तीसरे सर्ग में अपरूप रूपसी श्रद्धा से मनु का साक्षात्कार होता है। श्रद्धा मनु को नवीन मानवी सृष्टि को सृजित करने विकसित करने की आल्हादक प्रेरणा देती है। और सहयोग व सरकार की आस्वास्ति भी। दोनों साथ–साथ रहने लगते हैं।

- श्रद्धा पुत्रवती होने वाली है मनु अपनी एकाधिकार वृत्ति और ईर्ष्या से प्ररित होकर उसे सोता छोड़कर भाग जाते हैं।मनु सारस्वत प्रदेश की साम्राज्ञी इड़ा के पास पहुॅचते है। और राज–काज में उसका सहयोग करते है। मनु की एकाधिकार वृत्ति के कारण यहॉ संघर्ष होता है। और वे आहत हो जाते है। श्रद्धा स्वप्न में मनु की इस स्थिति को देखकर वहॉ पहुचती हैं और शीतोपचार से उन्हे स्वस्थ करती हैं। मनु पुनः भागकर एक गुफा में ध्यानावस्थि हो जाते और श्रद्धा उन्हे ढूढ़कर इड़ा और अपने शिशु मानव के साथ हिमवान की उॅची चोटी पर ले जाती है। जहॉ उन्हे इच्छा, क्रिया, ज्ञान तीनो लोक का दर्शन कराती है श्रद्धा की मुश्कान से तीनो लोक मिलकर एक हो जाते हैं
- महाकाव्य की इस घटना एवं आख्यान अत्यल्प एवं सुक्ष्म है पर मानवीय मनोवृत्तियों का अद्भुत व विस्तारपरक वर्णन इसे उदान्त घटना क्रमों तथा अनुभवों का सूक्ष्म संवेदनीय काव्य ठहराता है।

- संस्कृत के महान आचार्यों मम्मट विश्वनार्थ आदि ने महाकाव्य के जिन लक्षणों एवं गुणों की चर्चा की है– सर्गबद्धता, धीरोदान्त, नायक मुख्य एवं आनुस्गिक कथा, नाटक, संधियाँ, संवाद, छन्द, वैविध्य, अलंकार, मुख्य———— विश्वास, विस्तार, प्रकृतिवर्णन,जीवन की विविध स्थितियों और संवेदनों का सम्यक समाहार कामायनी को महाकाव्यत्व की गरिमा देता है

कामायनी का मुख्य रस शान्त है, कथानक पुराण इतिहा सम्मत है। इसमे तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति, युगबोध और राष्ट्रीयता का भाव पलिक्षित होता है आनन्दवाद की स्थापना समरसता का संदेश इसे महान उद्देश्य का महाकाव्य सिद्ध कराता है।

कामायनी में मानवीय जीवन की शाश्वत समस्याओं, अमूर्त संवेदनाओं और क्रियाओं का वैविध्यपूर्ण संयोजन है कामायनी का देशकाल की सीमा से उपर उठकर समग्र मानवता को संबोधित करता है। भाव–वृत्ति, कर्मवृत्ति, ज्ञानवृत्ति के बीच सामंजस्य का संदेश उदान्त है। समन्व का जीवन–दर्शन, अलंकार विधान बैचि–– बिम्ब सृजन, प्रतिकात्मकता उसे महाकाव्य की गरिमा देती है।

प्रसाद छायावाद के प्रतिनिधि कवि

- छायावाद 1918 से 1936 (उच्छवास के युगान्त) तक की प्रमुख युग की वाणी रही जिसमें प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी थी। स्वच्छन्दता की सामान्य भावधारा की विशेष अभिव्यक्ति का का नाम हिन्दी साहित्य में छायावाद पड़ा।
- प्रसाद की कामायनी 'छायावाद' की सर्वश्रेष्ठ बौर प्रतिनिधि कृति है।
- स्वानुभूति की व्यंजन।
- प्रसाद की प्रारम्भिक रचनाओं में जैसे प्रेमपथिक, लहर, झरना और नाट्य गीतों में उनकी व्यक्तिगत सुख–दुखात्मक अनुभूतियॉ ही रूपायित हुई है। प्रसाद की आत्म–स्वीकृतियॉ भी उनकी अनूभूति की निदर्शन कराती है।
- दार्शनिकता एवं रहस्य भावना काव्य में व्यैक्तिक प्रणय से उठकर समष्टि कल्याण भाव से जोड़ दिया है प्रसाद ने समस्त विश्व और प्रकृति को रहस्यमय माना ओर उसमें अद्‌भुत शक्ति का आभास पाया है।

कामायनी में लिखते है

महानील इस परम व्योम में
अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान
ग्रह नक्षत्र और विश्रुत कर
करते थे किसका संधान

- प्रेम सौनदर्य एवं प्रकृति प्रसाद का दृष्टिकोण जीवन और जगत के प्रति सूक्ष्म था। पार्थिव सौन्दर्य के प्रति वे पवित्र और सूक्ष्म बोध के आग्राही थे प्रसाद मूलतः प्रेम सौन्दर्य के कवि थे। प्रकृति को वे मानव सापेक्ष मानते है मानवी करण द्वारा उसका असीम सौन्दर्य सृजित किया है–

'सिन्धु सेज पर घरा वधु अब
तनिक संकुचित बैठी सी
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में
मान किए–सी ऐंठी सी'

- कल्पना शीतल एवं भावुकता प्रसाद ने कविता को समृद्ध और हृदयग्राही बनाया है सूक्ष्म मनोभावों एवं अन्तर्दशाओं के चित्रण, उपमा और रूपकों से दृश्यविधाओं में उन्होने कल्पना की उन्मुक्त उड़ानों का आश्रय लिया है।
- नारी भावना एवं मानवतावाद प्रसाद नारी के प्रति असीम श्रद्धा का भाव लेकर साहित्य के क्षेत्र उतरे वे नारी को साक्षात मूर्तिमति 'श्रद्धा' कहते है।

''नारी केवल तुम श्रद्धा हो''

- रचना प्रक्रिया और सृजनशीलता प्रसाद ने खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में स्वीकार किया और उसे साहित्यिक गरिमा लाक्षणिकता व प्रतीकों से सम्पूरित किया भाषा को सांगितिक लयात्मकता प्रवाह, संस्कृतनिष्ठता और विविध अर्थ ——— की दृष्टि से सक्षम शाब्दिकता से युक्त करन का श्रेय प्रसाद को है।
- समर्थ भाषा ही समर्थ काव्य सृजन की पहली अनिवार्यता है।
- कामायनी ने प्रेम सौन्दर्य, प्रकृति, मानाववाद मनोवैज्ञानिकता अद्वैत दर्शन, मानवीकरण, नारीभाव, मिथक, प्रतीक, बिम्ब विधान, संगीतमयता और भाषा की उदान्त रचनाशीलता की दृष्टि कामायनी अद्‌भुत एवं विशिष्ट संरचना है।

उपर्युक्त विशेषताए प्रसाद को सक्षम व श्रेष्ठ कवि सिद्ध करती है।